1. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No. :→ 50530. नामदेव जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

3. Acc. No. :→ 50531. तिलोचन जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

4. Acc. No. :→ 50532. अंगद जी की परिचई by- अनन्तदास।

5. Acc. No. :→ 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No. :→ 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No. :→ 50535. शकुनावली।

8. Acc. No. :→ 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No. :→ 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No. :→ 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

॥ ई० ॥ श्री गणेशाय नमः गुरभ्यो नमः श्री शारस्वतै नमः ॥ अथ नामदेव जी की परचइ लिख्यते ॥

अलष निरंजन पुरउ तोही ॥ साधसंगति सदा दै मोही ॥ मागौ भगति अरु ब्रह्म गियाना ॥ कथा पुरातन सो परवाना ॥१॥ संवत सोलासै पैताला ॥ बानि बोलै बचन रसाला ॥ अंतरजामी आग्या दीनी ॥ दास अनंत कथा कहि लीनी ॥२॥ गुर परसादै हरिगुं गाउं ।

गुरपरसादि परमपद पाेउ ॥ बितउनमैं

निंअकालिउपजाउ ॥ हरि भगतनकी

परचइ सुनाउ ॥ २ ॥ शतजुगद्वापर

त्रेता गाईया ॥ तिन भगतनेकामन

पयाई ॥ तिनि भगतन का अंतन जा

नौ ॥ ४ ॥ प्रथम कलि मैं नामदेव भ

या ॥ जीनके सो अपने बलि करि

लया ॥ दुधपीवाय देवल फेरयौं ॥

पातिसाह स्यो झगरा नवे स्यो ॥ ५

तन मन धन पारब्रंह्म को अर्पी

गायजीवायह स्तितुरष्या ॥ सूकी

सेझ जलां ते आनी ॥ राजापरजा

सवहि जानि ॥ ६ ॥ हठ करि हरि पै बा
त कहाई ॥ पाहन की मुंर तिबि ग
साई ॥ बल धजि वाय गाउ चाली
हरि स्यौ बात काहि सो पाली ॥ ७ ॥
रे कलि गन दै काज सवारा ॥ अ
प नै हाथि हरि नरक निवारा ॥
यार सि उपासा नामो रहिता ॥
कहदि नो दोथि नारी कहिता ॥ ८ ॥
हरि कीया बांम्हन का भेषा ॥ मा
गै कोन ग्रारू करै संतोषा ॥ नामु
कहै दास जिन देहू ॥ दुध दही बहुतै

रा लेहू ॥ स ॥ ज्या रिसि कैद्दिनै ग्रंनन
दै हूं ॥ औरै देवन आपन लेहू ॥ क
रू ई उपगार न यौह बताई ॥ त्या
गै पापन होय भलाई ॥ १० ॥ बाभ
न बोलै सुनि रै छिपा ॥ हू फिरि आ
यो जंबू दीपा ॥ तै मो स्यो षेचरि च
लो ई ॥ चुष मुवां कौ नै गति पाई
११ ॥ ना मै कहै ज्या रसि कैपा नां षी
रू के मां गर सा के ता आं रवौ ॥ औ
र न गत का मरम न जानो ॥ १२ ॥ बा
म्हन बोलै सु नि रै बौरा ॥ सा चा स
बद मां नि लै मोरा ॥ जब लग फिर

देहरि नही आवे ॥ तब लग धंमेत्र
ने कढि ठावे ॥१३॥ जब लग नाहि
रिव परकासै ॥ तब लग सिसिह
र करै उजासै ॥ तेलि कै घति मै बी
होई ॥ तेल बिरस्यौ जीवै सोइ
१४ ॥ एक दिना नई घृतस्यौ ने
टा ॥ पायो स्वाद तेल जब मेटा
ऐसब है वैलै ब्योहारा ॥ हरि बि
न कौ न उतारै पारा ॥ कहत ना
मदेव बाहन कीजे ॥ अंनन देहो
औ रस बलीजे ॥ मिस कारि मुवे प
स्यो दिजहारे ॥ नयो नग मै है है

कारा॥१६॥सो उाकहै मुडियो अपरा
धी॥बांम्हन मारि जगति किंनसा
धी॥नर म्या जगत स बैउठि नागा
यो अपराध बउ तो हि लागा॥१७
तेरा मुषको देषे पापी॥अैसी बा
तर है क्यौ बांपी॥दोहा॥१८॥आप
ने ला तो जुग नेला॥नातर न ला
ने कोय॥कै जीव जा णे आपणा
कै जामै बीती होय॥१९॥चौपई॥
कहत नामदेव हूं नीमति हैा॥बाम्ह
न साषि अगनि मे जरि है॥रची
सा नैती उपर बैठा॥तब जीव जाय

मजा मे पैठा॥ बाम्हन संगि जल न
जब लागा॥ हस्त हस्त हरि उतरला
गा॥ धन धन नामदेव साचा भगता
ग्यार सि छाडी दे है रहम्न कता॥२०
राम सुमिरि ले छाडि पसारा॥ क
र्म धर्म बंध्या संसारा॥ मी सरिमा
हि ग्यन कैसा मिलइ॥ दूध मै कांजी
कैसा नीलइ॥३॥ जगति मै कौ बे
र षटाई॥ दूजा धर्म करो मति ना
ई॥ तब तै नामदेव ग्यारस छाडी॥
जब तै हम गये है बांडी॥४॥ दोहा॥
ऐकादसी न जानही॥ भरमि भुल्या

सब लोग ॥ मन लेबा धपा द्वादसी ॥ मु
कति कहा स्यो हे गय ॥ ५ ॥ २ ॥ चौपही
साहरे क पाउर पुर मांही ॥ चवदोतु
ला जान्यो सब कोंही ॥ दीया हर
ब जैसा जह जान्यो ॥ बहरयोबु
जैसा हसियाना ॥ १ ॥ अब कोइ
रहे नगर मैं आइ ॥ तब नामा की
षबरि कराई ॥ आनो नगबेगि मो
पासा ॥ बिनदिया वार है निरासा
॥ २ ॥ ऐक बुलावा दोय बुलावा ॥ ती
जै सबदि नामदेव आवा ॥ ल्योह
डब आदर करै ताहूं ॥ धर्म हमारा
सूफल कार जाहू ॥ ३ ॥ हमतो नही

दरबके चुषे ॥ इतनीकहतसाहस
बहूषे ॥ यौजानिकहोरामजनचाइ
बिनदिनामेरीपतिजाई ॥४॥ जो
तुमल्यौह बहोत अरुघोरा ॥ तो
जसरहैजगमैमोरा ॥ कहतना
मदेव सुनिरैसाहूं ॥ तैसुनादिया
सकाहूं ॥५॥ मेरेहिये नपुराहोइ
मेरैष्यालिपरैमंतिकोइ ॥ जेन
रहैतौ इतनिकरहू ॥ रतिएक
मेरैकरीधरहूं ॥६॥ जौसिबिधिक
हैसोमांनो ॥ पातरेकतुलछी

का आनौ ॥ पातवरा बारि तौ लौ सोना

ज्यौं हम त्यों हतुमकौ है पुंना ॥ ७ ॥

वि मल सेठ कहै समझाइ ॥ ईतना

कौ कहा मागौ जाई ॥ तौ ला पाच

सात किन लेहू ॥ पीछै हमकुं दे

स न देहू ॥ ८ ॥ कहत नामदेव हरि

है ऐसा ॥ देषत मासा करि हो कै

सा ॥ ईतना राघ्या बोलि तुम्हारा ॥

चकै नेसी बसु होय हमारा ॥ ९ ॥

तब तुलसी का पात मगाया देष

न लोग नगर का आया ॥ पात मांझ

लिष्या रंकारा ॥ ता मै तीन लोक

कामारा॥१०॥ दोहा॥ अधरनावु
कैपरतरै॥ देवेकौकूछनाहि॥सक
लरिधिसिधिबापडी॥ऊठोदैहैजा
हि॥११॥ चौपही॥घालितराजुतो
लराल्लागया॥नयाअचिरजसो
वतसाजाग्या॥सोनारूपाआणि
चढाया॥माणिकमोतीलेलेधा
या॥१॥बडीतुलामैले॥द्दलधरि
तौउनेहोइपातसमसरिया॥द्
र्वचढायाजोघरमाही॥बहूरिलै
नउधारोजांही॥२॥जितनाबनि
पान्यौतेआया॥उमबकुतेरार

बैचहाया॥ इल्लकापत्लान धरतिछा
उै॥ तैकबेरकाधर्मन घौडै॥३॥ता
पीछैबेलासबनारी॥ तिनकाआ
भूषनलीयाउतारी॥ गारीदेदेरो
वैनारी॥ काहेनिरतातू घरवेवे॥४॥
बाजाबाजतबरजैबनिया॥ मंगल
जिनगावेकामनिया॥ कहैतनाम
देवमननदुलावो॥ आपनोआनो
धरमचढावो॥५॥ नामदेवकही
सोमांनी॥ सकलपछाडेदेपानी
कानूबांम्हनलाबजीमाया॥ का
म्हेहोमपचासकराया॥६॥ कानू

तपतीरघ्रकी न्हा॥धरमनअनेकञ्ज
पनाचीन्हा॥इसबदीयेशाहकैम
गै॥कुठेअरधनावकेआगै॥७॥ज
ईकलाजबसाहषिसाना॥तापरि
बाम्हनअधिकरिसाना॥करि
डंडोतजुमानिहमारी॥हमकछु
गतिलषनतुम्हारी॥८॥तिहुउ
ठाईडुबतुमनामा॥जोकछुदी
योसुपुरयोरामा॥रैरामदिवाये
कबतुमदीन्हौ॥कैरोबउाईरांम
नचिन्हौ॥९॥जैतुमपातबराबरि

देता ॥ तौ हम दर्बि तुम्हारै लेता ॥ अ
ब वो छा काहे कौ लैही ॥ तातै तुम्हा
रै तूम कौ रही ॥ १० ॥ तब नामें दू
लीया उठाया ॥ अर्ध नाव का परचा
पाया ॥ ११ ॥ ऐसा परचा बसनूं केता
नामा कौ हरि दीया जेता ॥ जैसे मैं का
नां सुं सुण्या तैसे कह्यौ ॥ और अ
ग बर राया यौ हार ह्यौ ॥ १२ ॥ दो
हा ॥ दास अनंत बिचारि ॥ च
गत न कौ जस गाय ॥ नामा की
कीरति कही ॥ आगै और सुंना
य ॥ १३ ॥ ४ ॥ इति श्री नांमदेवजी